UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 110-111

"गुरु–शिष्य संबंध"

डॉ.मोहिनी नेवासकर
(सहायक प्राध्यापक)

सारांश :–
आज के संदर्भ में जब हम गुरु–शिष्य संबंधों पर चर्चा कर ही रहे है, तब सभी इस बात पर तो सहमत होंगे कि बच्चा माँ के पेट से कुछ भी सीख कर नहीं आता है। नित्य कर्म से लेकर राष्ट्र की बागडोर सम्भालने तक की सारी शिक्षा बालक को उसके माता–पिता तथा गुरू के साथ चारों तरफ व्याप्त वातावरण से ही प्राप्त होती है। बालक जीवन का प्रथम पाठ परिवार में रहकर ही सिखता है।

प्रस्तावना

आज के संदर्भ में जब हम गुरु–शिष्य संबंधों पर चर्चा कर ही रहे है, तब सभी इस बात पर तो सहमत होंगे कि बच्चा माँ के पेट से कुछ भी सीख कर नहीं आता है। नित्य कर्म से लेकर राष्ट्र की बागडोर सम्भालने तक की सारी शिक्षा बालक को उसके माता–पिता तथा गुरू के साथ चारों तरफ व्याप्त वातावरण से ही प्राप्त होती है। बालक जीवन का प्रथम पाठ परिवार में रहकर ही सिखता है।

इसके पश्चात आता है विद्यालय जहाँ बालक को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार तथा व्यवहारिकता का मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।यह सब शिक्षा प्रदान करनेवाले शिक्षक तथा शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी दोनो ही के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बात की पुष्टि के लिए रामायण तथा महाभारतकालीन गुरु–शिष्य परम्परा का उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक होगा। जहाँ गुरू वशिष्ठ जैसे शान्तिप्रिय त्यागी और ज्ञानी महर्षि थे तो गुरू विश्वामित्र के समान अन्याय के विरूद्ध संघर्ष के लिए संस्कारित करनेवाले विद्वत भी थे।

इन दोनों के सान्निद्ध में रहने से राम के रूप में भारतीय जनमानस में एक ऐसे देवता का जन्म हुआ जो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये,जिन्होंने राजपाट को ठुकराकर वनवासी जीवन को स्वीकारा तथा असुरी शक्तियों के विनाश में अपना जीवन समर्पित कर दिया। दूसरी तरफ द्रोणाचार्य जैसे (गुरू) शिक्षक थे जिन्होंने अपने शिष्य अर्जुन को अपराजेय धनुर्धर बनाने के लिए एकलव्य जैसे निष्ठावान शिष्य का अंगूठाकाटवा दिया। इस निष्ठा हनन का प्रभाव निश्चित रूप से द्रोणाचार्य के अन्य शिष्यों पर भी पड़ा जिसका परिणाम यह रहा कि वे एक दूसरे का सिरकाटने के लिए उद्धत हो गये। पितामह भिष्म को भी बाणों से भेद दिया गया। स्वयंद्रोणाचार्य का भी सिर काट दिया गया।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 110-111

इसी प्रकार सिकन्दर में असीम साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति के संस्कार उस के गुरू सुकरात और अरस्तू द्वारा प्रदान किये गये थे, तो वीर शिवाजी में साहस के संस्कार उनके गुरू रामदास ने प्रवाहित किये थे। आधुनिक सन्दर्भ में गाँधीजी के गुरू गोखले थे तो नेहरू अपना गुरू गाँधीजी को मानते थे। इनके जीवन का मूल्याकंन करे तो हमें गुरूओं की विद्वता में शिष्यों की सफलता दिख जाती है।